This question paper contains 3 printed pages.

Roll No. ..............................

**B.A. (Pt. II)**

# 2102-I A

**Hindi. Litt. I**

**B.A. (Part II) EXAMINATION, 2020**

**(For Non-Collegiate Candidates)**

(Faculty of Arts)

(Three Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

## HINDI LITERATURE - I

प्रथम प्रश्न – पत्र

**( रीतिकाल )**

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 100

*प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें।*

*सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।*

*किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।*

1. निम्नलिखित पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 10x4=40

(क) सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहैं जहं एक घटी। 10

निघटी रुचि मीचु घटी हूँ घटी जगजीव जतीन की छूटी तटी।

अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरुज्ञान-गटी

चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी जटी पंचवटी।।

**अथवा**

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।

भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सब बात।।

निसि अँधियारी नील पटु पहिरि चली पिय-गेह।

कहाँ दुराई क्यौं दुरै, दीप-सिखा सी देह।।

कनक कनक तैं सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।

उहिं खाए बौराइ जगु, इहिं पाएं बौराइ।।

(ख) डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लन कै, 10

सुमन झंगोला सोहै, तन छबि भारी दै।

पवन झुलावै केकी कीर बतरावै देव,

कोकिल हलावै हुलसावै कर तारी दै।।

पूरित पराग सों उतार करै राई लौन,

कुन्दकली नायिका लतान सिर सारी दै।

मदन महीप जू को बालक बसन्त ताहि,

प्रातहिं जगावत गुलाब चटकारी दै।।

अथवा

दैहों दधि मधुर घरनि धर्‌यो छोरि खैहैं,

धाम ते निकसि धौरी धेनु धाइ खेलि हैं।

धौरि लौटि ऐहैं लपटैहैं लटकत ऐहैं,

सुखद सुनैहैं बैन बतियां अमोलि हैं।।

'आलम' सुकवि मेरे लालन चलन सीखै,

बलन की बाँह ब्रज-गालिनि में डोलिहैं।

सुदिन सुदिन दिन ता दिन गिनैगी भाई,

जा दिन कन्हैया मोसों मैया कहि बोलि हैं।।

(ग) ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी, 10

ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती हैं।

कंदमूल भोग करैं कंदमूल भोग करैं,

तीन बेर खाती ते वै तीन बेर खाती हैं।।

भूषन सिथिल अंग भूषण सिथिल अंग,

बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती हैं।

'भूषन' भनत शिसवराज बीर तेरे त्रास,

नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं।।

अथवा

भौर तैं साँझ लौं कानन-ओर निहारति बावरी नैकु न हारति।

साँझ तैं भोर लौं तारिन ताकिबौ तारनि सों इकतार न टारति।।

जौ कहूँ भावतो दीठि परै घनआनन्द आँसुनि औसर गारति।

मोहन सोंहन जोहिन की लगियै रहै आँखनि के उर आरति।।

(घ) कूलन में केलिन, कछारन में, कुंजन में, 10
क्यारिन में, कलिन कलीन किलकंत है।
कहै पद्माकर, परागन में पौन हू में,
पानन में, पिकन, पलासन पगंत है।।
द्वार में दिसान में, दुनि में, देश – देशन में,
देखों दीप दीपन में दीपत दिगंत है।
बीथिन में, ब्रज में, नबेलिन में बेलन में,
बनन में, बागन में बगर्‌यो बसन्त है।।

**अथवा**

कालिन्दी की धार निरधार है अधर गन
अलि के धरत जा निकाई के न लेस हैं।
जीते अहिराज, खंडि डारे हैं सिखंडि धन,
इंद्रनील कीरति कराई नाहिं ऐस हैं।।
एड़िन लगत सेना हिय के हरष – कर,
देखत हरत रति कंत ते कलेस हैं।
चीकने, सघन, अँधियारे तें अधिक कारे,
लसत, लछारे, सटकारे, तेरे केस हैं।।

2. ''केशव कठिन काव्य के प्रेत है।'' कथन की समीक्षा कीजिए। 15

**अथवा**

देव के काव्य सौन्दर्य को सोदाहरण समझाइए।

3. बिहारी की काव्यगत विशेषताएँ बताइए। 15

**अथवा**

''भूषण वीर रस और ओज गुण के कवि है।'' इस कथन के आलोक में समीक्षा कीजिए।

4. 'धनानंद के काव्य में अनुभूति के साथ-साथ अभिव्यक्ति की अनुपम योजना है।' कथन की विवेचना कीजिए। 15

**अथवा**

'सेनापति का 'ऋतुवर्णन' अनुपम है।' सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

5. 'पद्माकर (पद्माकर) का काव्य शृंगार, भक्ति और वीर रस की त्रिवेणि है।' सोदाहरण समझाइए। 15

**अथवा**

'आलम का काव्य प्रेम की गहन अनुभूति को व्यक्त करता है।' कथन के आलोक में विवेचना कीजिए।

-oOo-